

डॉ. डेविड ए. डिसिल्वा , इब्रानियों, सत्र 3, इब्रानियों 2: 5-18: पुत्र में आशा और सहायता © 2024 डेविड डिसिल्वा और टेड हिल्डेब्रांट

पिछली प्रस्तुति में, हमने इब्रानियों के पहले प्रमुख तर्कपूर्ण खंड, अर्थात् अध्याय 1, पद 1 से अध्याय 2, पद 4 की जांच की, जिसे हमने एक अंतर्निहित न्याय-वाक्य के आधार पर एक इकाई में एक साथ बंधे हुए पाया। लेखक ने इस न्याय-वाक्य को पुत्र, यीशु के बारे में प्रशंसात्मक पुष्टि के साथ और समग्र तर्क में छोटे चरणों के साथ महत्वपूर्ण रूप से अलंकृत किया था। इब्रानियों के दूसरे अध्याय का शेष भाग पहले अध्याय में पेश किए गए मजबूत क्राइस्टोलॉजिकल विषयों को विकसित करना जारी रखता है।

पुत्र द्वारा कहे गए शब्दों पर ध्यान देने की गंभीरता को महत्व देने के उद्देश्य से किया गया है , बल्कि दर्शकों को देहाती आराम और आशा प्रदान करने के लक्ष्य के साथ भी किया गया है, जिन्होंने इस बिंदु तक पुत्र के प्रति अपनी प्रतिक्रिया के परिणामस्वरूप इस दुनिया में सम्मान और स्थिति खो दी है। इस खंड का मुख्य बिंदु लेखक का भजन 8, पद 4 से 6 का क्राइस्टोलॉजिकल वाचन है, जिसमें वह स्थापित करता है कि पीड़ा के माध्यम से महिमा के लिए यीशु का मार्ग वह तरीका है जिस पर कई बेटे और बेटियों को यात्रा करने की उम्मीद करनी चाहिए यदि वे अपने दिव्य नियुक्त भाग्य तक पहुँचना चाहते हैं। लेखक अध्याय के शेष भाग के लिए आगे बढ़ता है और फिर पीड़ा के बाद ही यीशु के महिमा में आने की उपयुक्तता पर विचार करता है।

क्योंकि मनुष्य की दुर्दशा मृत्यु के भय के अधीन होना और परीक्षण और परीक्षा का सामना करने के लिए मुक्ति की आवश्यकता है, परमेश्वर ने अपनी दूरदर्शिता में, समय से पहले ही पुत्र को उनका अगुआ बनने के लिए तैयार कर दिया, उसे पीड़ा से गुजरते हुए उनके आगे महिमा में ले गया। इस तरह, श्रोताओं को आश्चर्य किया जा सकता है कि उनके वर्तमान अप्रिय अनुभव वास्तव में परमेश्वर से दूर होने का संकेत नहीं हैं, बल्कि ठीक उसी जगह होने का संकेत हैं जहाँ परमेश्वर जानता था कि वे महिमा के मार्ग पर पुत्र के पदचिन्हों पर चलते हुए होंगे। इब्रानियों 2, आयत 5 से 9 में, लेखक भजन 8 के पाठ का परिचय देता है जिसे वह इन शब्दों के साथ स्पष्ट करेगा, क्योंकि यह स्वर्गदूतों के अधीन नहीं था कि उसने आने वाले संसार के बारे में बात की है।

के लिए शब्द के साथ, लेखक अध्याय 2, श्लोक 1 से 4 के लिए एक तर्क के रूप में आगे क्या पेश करता है, जो किसी के जीवन में पुत्र के वचन को उचित ध्यान देने के आह्वान का समर्थन करना जारी रखता है। हम पहले ही देख चुके हैं कि यहाँ आने वाला संसार ईश्वरीय क्षेत्र है, जो, हालाँकि यह अभी ईश्वर और उसमें रहने वाले आध्यात्मिक प्राणियों के लिए मौजूद है, लेकिन अभी तक मनुष्यों के लिए सुलभ नहीं है, और इसलिए, हमारे दृष्टिकोण से, यह एक आने वाला क्षेत्र है। यह एक ऐसा क्षेत्र है जो तब प्रकट होगा जब भौतिक आकाश और पृथ्वी को हिलाया और हटाया जाएगा।

यहाँ लेखक का कहना है कि इस आने वाले संसार को पुत्र के अधिकार के अधीन करके, परमेश्वर ने पुत्र को यह अधिकार दिया है कि कौन उस संसार में प्रवेश करेगा, और इसलिए, पुत्र के प्रति व्यक्ति की निरंतर प्रतिक्रिया आने वाले राज्य में उसके स्थान के लिए निर्णायक है। क्या हम पुत्र का सामना ऐसे शत्रुओं के रूप में करेंगे जिन्हें उसके पैरों के नीचे दबा दिया जाएगा, जैसा कि भजन 110 के उद्धरण में वादा किया गया है? या क्या हम पुत्र का सामना उन अनेक पुत्रों और पुत्रियों के रूप में करेंगे जिन्होंने पुत्र को अपनाया है और पुत्र ने उन्हें इस राज्य में स्वागत करने के लिए अपनाया है? लेखक अब भजन के पाठ को ही उद्धृत करता है। किसी ने कहीं गवाही दी है, यह कहते हुए, मनुष्य क्या है कि तू उसका स्मरण करे, या मनुष्य का पुत्र, कि तू उसकी चिन्ता करे? तूने उसे स्वर्गदूतों से कुछ ही समय या कुछ ही कम बनाया है।

तूने उसे महिमा और सम्मान का मुकुट पहनाया है। तूने सब कुछ उसके पैरों के नीचे कर दिया है। अपने मूल संदर्भ में, भजन 8 को परमेश्वर की सृष्टि में मनुष्य के स्थान के उत्सव के रूप में पढ़ा जाएगा।

ये पंक्तियाँ, मनुष्य क्या है कि तू उसका ध्यान रखता है, मनुष्य के बच्चे क्या हैं कि तूने उनका ध्यान रखा है, पारंपरिक रूप से सभी नश्वर प्राणियों के सामान्य संदर्भ के रूप में समझी जाती हैं। यह महत्वपूर्ण हो सकता है कि इब्रानियों के लेखक ने मूल भजन में इन छंदों से एक पंक्ति को छोड़ दिया है। तूने उसे अपने हाथों के कामों पर नियुक्त किया है, जो सामान्य रूप से सृष्टि में मानवता के स्थान का स्पष्ट संदर्भ है, जो उत्पत्ति 1 और 2 और मानवता के आदेश को ध्यान में रखते हुए ईश्वर द्वारा बनाई गई दुनिया की देखभाल करता है।

इब्रानियों के लेखक को भजन 8 के इस पारंपरिक पाठ के बारे में कोई संदेह नहीं है, लेकिन वह इसके बजाय इस पाठ का एक क्राइस्टोलॉजिकल पाठ प्रस्तुत करता है। वाक्यांश, मनुष्य का पुत्र, एक ऐसा शीर्षक है जो अक्सर यीशु और सुसमाचार परंपराओं से जुड़ा होता है, और यह लेखक के लिए पाठ को पुत्र, यीशु पर लागू करने का प्रवेश बिंदु बन जाता है। आधुनिक अनुवाद जो लिंग-तटस्थ भाषा के लिए प्रतिबद्ध हैं, जहाँ तक मनुष्यों का संबंध है, अक्सर मनुष्य के पुत्र वाक्यांश को अधिक सामान्य रूप से नश्वर के रूप में प्रस्तुत करके और उसके बाद के छंदों में उससे आगे बढ़कर इसे अस्पष्ट कर देते हैं।

यह भजन को मनुष्यों के लिए इसके पारंपरिक अनुप्रयोग के अनुरूप अनुवाद करने के लिए एकदम सही है, लेकिन यह पूरी तरह से अस्पष्ट करता है कि इब्रानियों के लेखक ने अपनी व्याख्या को कारगर बनाने के लिए भजन पाठ में क्या उपयोग किया है, अर्थात् मनुष्य के पुत्र की सटीक भाषा जो मरकुस, मत्ती और लूका के सुसमाचारों में यीशु का खुद को संदर्भित करने का पसंदीदा तरीका भी है। इस तरह, यह भजन पाठ और उस पाठ की लेखक की व्याख्या के बीच की दूरी को प्रस्तुत करता है जो ग्रीक में मौजूद नहीं है। भजन के सेप्टुआजेंट संस्करण में एक विशेष मोड़ है जो इसे यीशु पर लागू करना आसान बनाता है।

इब्रानियों में, यह स्पष्ट है कि परमेश्वर ने मनुष्यों को स्वर्गदूतों से थोड़ा नीचे रखा है। सृष्टि की सीढ़ी पर मनुष्य स्वर्गदूतों से थोड़े ही कमतर हैं। जब वही इब्रानी शब्द जो हमें थोड़ा सा स्थानिक माप देता है, ग्रीक में अनुवादित किया जाता है, तो यह अस्पष्ट हो जाता है।

यह स्थानिक या लौकिक, थोड़ा कम या थोड़े समय के लिए कम हो सकता है। इब्रानियों के उपदेशक ने भजन के अवतारी पाठ को बनाने और फिर यीशु के जीवन में क्रमिक घटनाओं पर ध्यान केंद्रित करने की दूसरी संभावना का फायदा उठाया। पुत्र के अवतार में स्वर्गदूतों के नीचे एक निम्न स्थिति को अस्थायी रूप से स्वीकार करना शामिल था।

लेकिन उस समय के बाद, पुत्र को महिमा दी गई। आपने उसे महिमा और सम्मान का ताज पहनाया। यह महिमा पुत्र की मृत्यु और स्वर्गारोहण तथा ईश्वरीय क्षेत्र में वापसी और परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठने के बाद हुई।

इस कहानी का अंतिम चरण, तुमने सब कुछ उसके पैरों के नीचे कर दिया है, अभी पूरा होना बाकी है, जैसा कि इब्रानियों के लेखक ने खुद अध्याय 2, श्लोक 9 में कबूल किया है। हम अभी तक सभी चीजों को उसके अधीन नहीं देखते हैं। यहाँ इस भजन पाठ और भजन 110 श्लोक 1 के बीच एक संबंध है, जिसे पहले उपदेश में सुनाया गया था: मेरे दाहिने हाथ बैठो जब तक मैं तुम्हारे शत्रुओं को तुम्हारे पैरों के नीचे की चौकी न बना दूँ। इस भजन में, तुमने सब कुछ उसके पैरों के नीचे कर दिया है।

तो फिर, यह लेखक के लिए पाठ को मसीह के दृष्टिकोण से पढ़ने के लिए एक संबंध बिंदु बन जाता है। लेखक पद 9 में इस भजन की भाषा को विशेष रूप से यीशु पर लागू करने के लिए आगे बढ़ता है। हम अभी तक सब कुछ उसके अधीन नहीं देखते हैं, लेकिन हम उस व्यक्ति को देखते हैं जो थोड़े समय के लिए स्वर्गदूतों के अधीन था, यीशु, जिसे मृत्यु की पीड़ा के कारण महिमा और सम्मान का ताज पहनाया गया ताकि वह, परमेश्वर की कृपा से, सभी के लिए मृत्यु का स्वाद चख सके।

इस वाचन में, लेखक ने भजन के पाठ को यीशु के जीवन और यीशु की कहानी के श्रोताओं के अनुभव में पूरी तरह से शामिल कर दिया है। लेकिन अब वह इस व्याख्या में एक अतिरिक्त अंश जोड़ता है, अर्थात् यह कि मनुष्य का यह पुत्र सभी के लिए मरा और यह किसी तरह से दूसरों के लाभ के लिए किया गया कार्य था और यह ईश्वर के अपने अनुग्रह का प्रकटीकरण था। यह आत्म-समर्पण का कार्य था जिसने श्रोताओं, प्राप्तकर्ताओं पर एक दायित्व डाला।

अब, इस सब में, लेखक अभी तक उस तक नहीं पहुँचा है जो भजन का मुख्य बिंदु होता। यह कैसे होता है कि मानवता महिमा और सम्मान तक पहुँचती है? यह अगले खंड का विषय होगा क्योंकि हम इब्रानियों 2, पद 10 में इस भजन के लेखक के विकास को आगे बढ़ाते हैं। भजन 8 के इस मसीह-केंद्रित पाठ की लेखक की प्रस्तुति के बाद, लेखक यह समझाना शुरू करता है कि क्यों एक पीड़ित मसीहा परमेश्वर की योजना का हिस्सा था।

हम पढ़ते हैं, क्योंकि यह उसके लिए उचित था, जिसके कारण सब कुछ था, और जिसके द्वारा सब कुछ है, बहुत से पुत्रों और पुत्रियों को महिमा की ओर ले जाने में, उनके उद्धार के अगुआ को कष्टों के माध्यम से सिद्ध करना। यहाँ शुरुआती शब्दों में, क्योंकि यह उचित था, हम देखते हैं कि लेखक इस श्लोक को पूर्ववर्ती सामग्री के लिए एक तर्क के रूप में स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करता है,

यह तथ्य कि यीशु को पहले मानव बनने का अपमान सहना पड़ा और फिर उसके महिमामंडन और उत्थान से पहले क्रूस पर मृत्यु का और भी अपमान सहना पड़ा। क्या उचित था? लेखक कहता है, यहाँ यह उचित था कि मसीह को, कष्टों के माध्यम से मुक्ति के मार्ग के लेखक या अगुआ को सिद्ध किया जाए।

इब्रानियों में पूर्णता का क्या अर्थ है, यह कई शोध-पत्रों का विषय रहा है। यहाँ, मैं केवल यह सुझाव देना चाहता हूँ कि इब्रानियों में परिपूर्ण भाषा का मुख्य रूप से किसी चीज़ को विकासात्मक प्रक्रिया के अंतिम बिंदु तक पहुँचाना है जिसके लिए उसे नियत किया गया था। इसे कई अलग-अलग संदर्भों में लागू किया जा सकता है।

बच्चा वयस्क होने पर पूर्ण हो जाता है। परिपक्वता प्राप्त होने पर मनुष्य पूर्ण विकसित होता है। प्राचीन दुनिया के रहस्यमय धर्मों में दीक्षा प्राप्त व्यक्ति, दीक्षा संस्कार समाप्त होने पर पूर्ण हो जाता है।

निर्गमन 29 की भाषा में, पुराने नियम के सेप्टुआजेंट अनुवाद में, पुजारियों को तब पूर्ण किया जाता था जब उनका अभिषेक संस्कार पूरा हो जाता था। इस उदाहरण में, यीशु को पूर्ण नहीं किया जाएगा क्योंकि उनमें कुछ कथित कमी को अंततः दूर कर दिया गया था, बल्कि इसलिए कि उन्हें उस अंतिम बिंदु पर लाया गया था जिसकी ओर परमेश्वर उन्हें ले जा रहा था या उनका नेतृत्व कर रहा था। इसे संभवतः मसीह की महिमा में स्वर्गीय क्षेत्र में वापसी के रूप में पढ़ा जाना चाहिए, मसीह का परमेश्वर की उपस्थिति के स्थायी क्षेत्र में वापस जाना, वहाँ महान उच्च पुजारी और परमेश्वर और मानवता के बीच मध्यस्थ के रूप में स्थापित होना।

मसीह को पीड़ाओं के माध्यम से सार्वभौमिक उच्च पुरोहिती के उस उच्च पद पर लाना क्यों उचित था? संभवतः इसलिए क्योंकि, लेखक के मन में, पीड़ा ही वह मार्ग होगा जिसके माध्यम से कई बेटे और बेटियाँ महिमा तक पहुँचेंगे। इस प्रकार, परमेश्वर की दूरदर्शिता में, परमेश्वर ने कई बेटों और बेटियों के अग्रदूत, उनके उद्धार के अग्रदूत को भी पीड़ाओं के माध्यम से यात्रा के उस अंतिम बिंदु तक पहुँचाया। कई बेटों और बेटियों के पास अभी भी लाभ हैं जिनका आनंद लिया जाना बाकी है, और विशेष रूप से, यहाँ लेखक उस महिमा में प्रवेश करने पर ध्यान केंद्रित करता है जिसमें यीशु पहले से ही स्वर्गीय क्षेत्र में, परमेश्वर के निवास के स्थायी क्षेत्र में प्रवेश कर चुका है।

लेखक यह सुझाव दे रहा है कि जिस तरह से भजन 8 का सामान्य अर्थ, भजन 8 मानवता से संबंधित महिमा के बारे में एक कथन है, जिस तरह से भजन 8 का सामान्य अर्थ यीशु, पुत्र, अग्रणी के माध्यम से होता है, जिसमें वह धार्मिक भविष्यवाणी अब पूरी हो गई है। डोक्सा, महिमा, भजन पाठ में और इब्रानियों 2, श्लोक 7 से 9 में भजन पाठ के पाठ में एक कीवर्ड है। यह एक ऐसा शब्द है जो लेखक के श्रोताओं की पादरी की ज़रूरत से मेल खाता है, जहाँ तक सम्मान, डोक्सा, या टाइमह, ठीक वही चीज़ है जो उन्होंने इस दुनिया में खो दी है क्योंकि वे पहली बार ईसाई आंदोलन में शामिल होने के लिए आए थे। इस प्रकार, लेखक उन्हें आश्चस्त करता है कि उनका भाग्य अपमान या शर्म में जीना जारी रखना नहीं है क्योंकि वे वर्तमान में अपने असमर्थ पड़ोसियों

की छाया में जीवन का अनुभव करते हैं, लेकिन उनका भाग्य उसी महिमा में साझा करना है जिसका आनंद स्वयं महान पुत्र उठाता है।

पुत्र की महिमा को उस महिमा से जोड़ने के बाद जो उन अनेक पुत्रों और पुत्रियों को मिलेगी जो यीशु द्वारा बताए गए मार्ग पर चलेंगे, लेखक अब पुत्र की अनेक पुत्रियों के साथ एकजुटता पर ध्यान केंद्रित करता है, और वह पुराने नियम के पाठों के कुछ सरल अनुप्रयोगों के साथ ऐसा करता है। जैसा कि हम इब्रानियों 2, पद 11 से 13 में पढ़ते हैं, क्योंकि जो पवित्र करता है, और जो पवित्र किए जाने की प्रक्रिया में हैं, वे सब एक ही से हैं। इसी कारण वह उन्हें भाई कहने में नहीं लजाता, और कहता है, कि मैं अपने भाइयों को तेरा नाम बताऊंगा।

सभा के बीच में मैं तेरी स्तुति करूंगा, और फिर उस पर भरोसा रखूंगा, और फिर देख, मैं यहां हूँ, और मेरे वे बच्चे भी हैं जिन्हें परमेश्वर ने मुझे दिया है।

इस प्रकार, धर्मग्रंथों के उद्धरणों की इस श्रृंखला में, लेखक ने पुत्र के होठों पर भजन 22 के शब्द और यशायाह के शब्द रखे हैं, जो कि यीशु की अनेक पुत्रियों के साथ निरंतर एकजुटता का धर्मग्रंथों में प्रमाण हैं। जब वह कहता है कि जो पवित्र करता है और जो पवित्र किए जा रहे हैं, वे सभी एक ही हैं, संभवतः उनका अर्थ है कि सभी एक ही स्रोत से हैं, तो लेखक मनुष्यों के सार्वभौमिक भाईचारे और बहनचारे पर स्टोइक प्रवचन के साथ प्रतिध्वनित होता है। उदाहरण के लिए, पहली शताब्दी ईस्वी के पहले भाग में सक्रिय रोमन दार्शनिक सेनेका लिखते हैं, हम सभी एक ही स्रोत से निकले हैं, एक ही मूल हैं।

स्वर्ग हम सबका एकमात्र माता-पिता है। इसके अलावा, प्रेरितों के काम अध्याय 17 में अरियुपगुस के समक्ष अपने भाषण में पौलुस ने अराटस नामक स्टोइक दार्शनिक का हवाला दिया है। हम सब उसकी संतान हैं।

हम सभी परमेश्वर की संतान हैं। लेकिन यहाँ इब्रानियों में, मुख्य रूप से सभी लोगों की एकजुटता पर ज़ोर नहीं दिया गया है। बल्कि, यह उन कई कम प्रतिष्ठित पुत्रों और पुत्रियों के साथ महान पुत्र की एकजुटता पर है, जिन्हें अभी भी इस बंधन में निहित सम्मान का आनंद लेना बाकी है।

और श्रोता कैसे जान सकते हैं कि वे महान पुत्र के साथ इस संबंध का आनंद लेते हैं? लेखक इस बात का प्रमाण देता है क्योंकि वह उन्हें भाई और बहन कहने में शर्मिंदा नहीं है। लेखक द्वारा किया गया यह दावा तीन आधिकारिक ग्रंथों के पाठ द्वारा समर्थित है, जिन्हें उस तरीके के रूप में प्रस्तुत किया गया है जिसमें पुत्र अपनी बहनों और भाइयों को अपनाता है। इनमें से पहला, मैं मण्डली के बीच में अपने भाइयों और बहनों को तेरा नाम घोषित करूंगा मैं तेरी स्तुति करूंगा, भजन 22 से लिया गया है, जो एक भजन का अंत है जिसे प्रारंभिक चर्च में मसीहाई वाचन के रूप में प्रसिद्ध किया गया था।

यह वह भजन है जो इस प्रकार शुरू होता है: हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों त्याग दिया? जुनून की कहानियों के आरंभिक निर्माण से, जहाँ यीशु ने क्रूस से भजन की इस आरंभिक कविता को पढ़ा, आरंभिक चर्च को इस भजन के मसीहाई, मसीह-केंद्रित वाचन से अवगत

कराया गया। यह लेखक की ओर से निम्नलिखित चरणों में एक उल्लेखनीय व्याख्यात्मक कदम है क्योंकि वह पुराने नियम के पाठों को उन पाठों की व्याख्या करने के लिए एक उपयुक्त रूपरेखा के रूप में यीशु के होठों पर रखता है। जब वह निम्नलिखित उद्धरणों पर जाता है, तो वह मूल रूप से यशायाह 8, श्लोक 17 और 18 में एक एकल, क्रमिक पाठ लेता है, और इसे दो अलग-अलग उद्धरणों में विभाजित करता है।

इस तरह, वह प्रत्येक भाग को यशायाह की तुलना में कुछ अलग अर्थ देने में सक्षम है। उदाहरण के लिए, यशायाह में, कथन, मैं उस पर भरोसा रखूँगा, ईश्वर में भविष्यवक्ता के भरोसे की अभिव्यक्ति थी। हालाँकि, यहाँ लेखक द्वारा हमें इसे पुत्र द्वारा उन सभी में विश्वास की अभिव्यक्ति के रूप में सुनने के लिए प्रेरित किया जा रहा है जिन्हें वह भाई या बहन कहता है क्योंकि यह वह शीर्षक है जिसके तहत इब्रानियों 2:11 से 13 में तीनों पाठों का पाठ किया जा रहा है।

यशायाह के उद्धरण का अगला खंड, देखो, मैं यहाँ हूँ और जो बच्चे भगवान ने मुझे दिए हैं, मूल रूप से पैगंबर द्वारा अपने बच्चों के बारे में एक घोषणा थी, जिसमें अब संदर्भ में महार-शालल-हशबास शामिल हैं, जिन्हें पैगंबर ने यरूशलेम के निवासियों के लिए संकेत और शगुन के रूप में नामित किया था। इब्रानियों के लेखक अब इसे बेटे द्वारा खुद बोले गए एक दैवीय कथन के रूप में लेते हैं, जो बेटे की कई बेटों और बेटियों के साथ एकजुटता को पहचानने और स्वीकार करने की खुली इच्छा का एक और सबूत प्रदान करता है। उपदेशक यहाँ उस सम्मान के बारे में बात कर रहा है जो उसके श्रोताओं के पास है, भले ही उनके पड़ोसी वर्तमान में इसे पहचान न सकें, इसके बजाय उन्हें अपमानित महसूस कराने की कोशिश कर रहे हैं।

पुत्र, जिसका महिमामंडन इब्रानियों 1:1 से 2:9 में मुख्य रूप से किया गया था, विश्वासियों के लिए इतना अधिक सम्मान रखता है कि वह उनके साथ सबसे करीबी तरीके से जुड़ना अपने लिए कोई अपमान नहीं समझता। निहितार्थ से, सुनने वालों को यीशु के साथ जुड़ना उनके लिए शर्म की बात क्यों नहीं समझनी चाहिए? यदि वह उन पर ऐसा भरोसा रखने को तैयार है, तो वे इस भरोसे को कैसे धोखा दे सकते हैं? इब्रानियों के लेखक ने जो लाभ पर जोर दिया है, उनमें से एक लाभ जो यीशु ने अपने अनुयायियों के लिए जीता है, वह है मृत्यु के भय से मुक्ति।

वह इसे अध्याय 2, श्लोक 14 और 15 में व्यक्त करता है। तब से, बच्चों ने मांस और रक्त साझा किया; उसने खुद भी उन्हीं चीजों में पूरी तरह से हिस्सा लिया, ताकि मृत्यु के माध्यम से, वह उस व्यक्ति को नष्ट कर सके जिसके पास मृत्यु पर शक्ति है, यानी शैतान, और उन लोगों को मुक्त कर सके जो अपने पूरे जीवन में मृत्यु के भय से गुलामी के लिए उत्तरदायी थे। इस अंश में, जैसा कि लेखक कई बेटों और बेटियों के साथ बेटे की एकजुटता पर जोर देना जारी रखता है, जिनमें से सभी ने अब मांस और रक्त की कमजोरी में हिस्सा लिया है, लेखक ने एक दार्शनिक विषय लाया है कि कैसे एक ऋषि या नायक अपने अनुयायियों को मृत्यु के भय से मुक्त कर सकता है और कठिनाइयों का सामना करने में पुण्य और साहस के प्रति मानवीय प्रतिबद्धता पर इसके अपंग प्रभावों से।

प्रारंभिक स्टोइक दार्शनिक एपिक्टेटस, जो वास्तव में हिब्रू के लेखक के समकालीन थे, लिखते हैं कि उदाहरण के लिए, मृत्यु कोई डरावनी चीज़ नहीं है, अन्यथा यह सुकरात को डरा देती। सुकरात को मृत्यु के साथ उनके निडर संघर्ष के लिए याद किया जाता है, जब उन्होंने एथेनियन सभा द्वारा उन्हें दिए गए हेमलॉक के प्याले को स्वीकार किया था। यह सुकरात इन दार्शनिकों की नज़र में एक नायक था, जो सिखाता था कि मृत्यु और मृत्यु की हर छाया जो हमारे रास्ते में आ सकती है, वह ऐसी चीज़ है जिसे संयमित दिमाग वाला ऋषि सहन कर सकता है और इसलिए, ऐसा कुछ नहीं है जो अनावश्यक रूप से सही काम करने की उनकी प्रतिबद्धता को बाधित करे।

सेनेका ने अपने एक नैतिक पत्र में इसे और भी विस्तार से बताया है। सुकरात ने जेल में रहते हुए, कुछ लोगों द्वारा मौका दिए जाने पर भागने से मना कर दिया ताकि वह मानव जाति को दो सबसे भयानक चीज़ों के डर से मुक्त कर सके: मृत्यु और कारावास। इब्रानियों के लेखक ने यीशु को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में देखा है जिसने यीशु के अनुयायियों के लिए, यहां तक कि बड़े पैमाने पर, वही काम पूरा किया है।

वह इस दार्शनिक विषय को जोड़ते हैं कि ऋषि निडरता से मृत्यु का सामना करते हैं, जो कि ईश्वर की शक्तियों के बीच ब्रह्मांडीय युद्ध के यहूदी और ईसाई सर्वनाशकारी विश्वदृष्टिकोण के साथ है, जो कि पुत्र और शैतान के व्यक्तित्व में है, जो ईश्वर और मानव जाति का ब्रह्मांडीय शत्रु है। यीशु की मृत्यु बंदियों की मुक्ति और उनके आध्यात्मिक बंदी पर विजय दोनों का कार्य है। मृत्यु के भय से मुक्ति का अर्थ है किसी भी बाहरी दबाव से मुक्ति।

इससे श्रोताओं को चुनौती मिलनी चाहिए कि वे अपनी चुनौतियों और अपनी परिस्थितियों को ऐसी चीज़ों के रूप में देखें जिनका वे नैतिक रूप से सामना करने में सक्षम हैं। उन्हें यीशु के प्रति अपनी वफ़ादारी में इन मृत्यु की फीकी छायाओं से विचलित होने की ज़रूरत नहीं है, जिनका उन्होंने सामना किया है, जैसे कि शर्म, निंदा और संपत्ति का नुकसान। यीशु द्वारा उन्हें मुक्त करने की यह घोषणा वफ़ादारी और कृतज्ञता का एक और कारण है, और इसे इन अभिभाषकों को यीशु की सेवा और यीशु के सम्मान को बढ़ावा देने में फिर से निवेश करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

लेखक अध्याय 2 के अंतिम छंदों में यीशु की योग्यताओं के बारे में बात करता है, जिसमें वह कई बेटों और बेटियों की मदद करता है। वह लिखता है, क्योंकि वह स्वर्गदूतों की मदद नहीं करता, बल्कि अब्राहम के वंश की मदद करता है, जहाँ से उसे हर तरह से अपने भाइयों और बहनों की तरह बनने के लिए बाध्य किया गया था, ताकि वह लोगों के पापों के लिए प्रायश्चित्त करने के लिए परमेश्वर की बातों के संबंध में एक दयालु और वफादार महायाजक बन सके। क्योंकि उसने खुद परीक्षा में पड़कर जो दुख उठाया, वह उनकी मदद करने में सक्षम है, जो परीक्षा में पड़ते हैं।

इस अंश में, हम पाते हैं कि लेखक ने यशायाह अध्याय 41 की कुछ पंक्तियों का विस्तृत पुनर्संदर्भिकरण किया है, जहाँ भविष्यवक्ता कहता है, अब्राहम का वंश, जिसे मैंने प्यार किया, जिसे मैंने पकड़ लिया, मैं तुम्हारा परमेश्वर हूँ जिसने तुम्हारी मदद की। नश्वर लोगों को पकड़ना और उनका उद्धार करना पुत्र के लिए बाध्य करता है कि वह उन लोगों की तरह बने जिन्हें उसने

बचाने और मदद करने की कोशिश की थी। यह पहले के विषय पर वापस आता है कि पुत्र के लिए केवल पीड़ा के माध्यम से महिमा में प्रवेश करना क्यों उचित था।

इसी माध्यम से परमेश्वर यीशु को परमेश्वर के अनुग्रह का सबसे प्रभावशाली और संवेदनशील सहायक और मध्यस्थ बना सका। यह अंश आर्किरियस, या उच्च पुजारी शब्द का परिचय देता है, जो एक प्रमुख श्रेणी बन जाती है जिसके अंतर्गत उपदेशक यीशु के कई पुत्रों और पुत्रियों की ओर से अतीत और वर्तमान दोनों के कार्यों की जांच करेगा। प्राचीन दुनिया में पुजारी ईश्वरीय और मानवीय के बीच पुल बनाने वाले थे।

दरअसल, पादरी के लिए लैटिन शब्द पोंटिफ़ेक्स का शाब्दिक अर्थ है पुल बनाने वाला। यीशु की भूमिका का वर्णन करने के लिए इब्रानियों में मध्यस्थ शब्द का बार-बार इस्तेमाल पुजारी के महत्व के बारे में इस जागरूकता का एक और प्रतिबिंब है, जो इस क्षेत्र में मनुष्यों को अन्यथा दुर्गम क्षेत्र में ईश्वर से जोड़ता है। यह दलाली का एक रूप है।

प्राचीन दुनिया में, एक मूल्यवान उपहार जो एक संरक्षक किसी और को दे सकता था, वह था उस संरक्षक के किसी अन्य मित्र या उच्च पदस्थ संरक्षक तक पहुँच। ऐसे मामले में, संरक्षक सहायता का वास्तविक उपहार नहीं दे रहा था, बल्कि वह उस व्यक्ति के बीच संबंध बना रहा था जो मदद के लिए उसके पास आया था और वह बड़ा संसाधन, वह बड़ा संरक्षक जो वह मदद प्रदान कर सकता था। यह उस तरह का संबंध है जो पुजारियों के बारे में प्राचीन सोच को दलाल, मध्यस्थ और पुल बनाने वाले के रूप में रेखांकित करता है।

लेखक यहाँ बेटे की पीड़ा को किसी तरह एक परोपकारी के रूप में उसकी योग्यता के लिए एक शर्त के रूप में बताता है। उसका अपना अनुभव, परीक्षण और परीक्षा से उसका अपना संघर्ष, उसे प्रलोभन का अनुभव करने वाले कई बच्चों की सहायता करने के लिए तैयार करता है। वह खुद परीक्षण और कठिनाई के धीरज में किसी भी संबोधित व्यक्ति की तुलना में कहीं आगे निकल गया है।

और इसलिए वे कभी भी खुद को ऐसी जगह नहीं पाएंगे जहाँ यीशु उनकी दुर्दशा के प्रति सहानुभूति नहीं रखेंगे, व्यक्तिगत अनुभव से नहीं जान पाएंगे कि उनकी ज़रूरतें किस तरह की असुविधा पैदा करती हैं। उपदेशक को उम्मीद है कि श्रोता यह सुने बिना उपदेश से बच नहीं सकते कि यीशु ने जो कुछ भी सहा वह मेरे लिए था और इसलिए, ऐसे महान उपकारकर्ता के प्रति उनकी कृतज्ञता और वफादारी नवीनीकृत हो जाएगी। इब्रानियों के लेखक ने यीशु पर एक उच्च पुजारी के रूप में ध्यान केंद्रित किया है, और यह उन्हें उनके कई विहित साथियों से अलग करता है, जहाँ यीशु को अक्सर एक पुरोहित मसीहा के बजाय एक राजसी मसीहा के रूप में चित्रित किया जाता है।

हालाँकि, जबकि राजा मसीहा, दाऊद का पुत्र अधिक आम है, द्वितीय मंदिर काल में कुछ मसीहा संबंधी अपेक्षाएँ एक पुजारी व्यक्ति के इर्द-गिर्द विकसित हुईं। यह दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व की शुरुआत में उच्च पुरोहिती में कुछ अजीबोगरीब घटनाओं से जुड़ा है, विशेष रूप से सेल्यूसिड सम्राट एंटीओकस IV के तहत सामान्य उच्च पुरोहिती वंश का टूटना जब उच्च पुरोहिती चाहने

वालों ने गैर-यहूदी राजा से उच्च पुजारी के पद के लिए बोली लगाना और प्राप्त करना शुरू कर दिया। यहूदिया के बहुत से इलाके उच्च पुजारी पद से पूरी तरह से असंतुष्ट हो गए और भविष्य के पुजारी की उम्मीद जो सही तरीके से कार्य करेगा, जो यहूदिया में उच्च पुजारी ढोंगियों के बजाय पुजारियों से अपेक्षित कार्य करेगा, प्रमुख होने लगा।

उदाहरण के लिए, मृत सागर स्क्रॉल में, हम न केवल इस्राएल के मसीहा के लिए बल्कि हारून के मसीहा के लिए भी काफी प्रमुख आशा पाते हैं, जो एक पुजारी व्यक्ति है। कुमरान के निवास ने इस उम्मीद को पोषित किया कि परमेश्वर दाऊद को राजशाही बहाल करेगा और वह सादोक को पुरोहिती बहाल करेगा। इनमें से एक स्क्रॉल के लेखकों में से एक लिखता है कि यह भावी पुजारी अपनी पीढ़ी के सभी पापों का प्रायश्चित्त करेगा और अपने लोगों के सभी बेटों के पास भेजा जाएगा।

उसका वचन स्वर्ग के वचन जैसा है, और उसकी शिक्षा परमेश्वर की इच्छा के अनुसार है। उसका सनातन सूर्य चमकेगा, और उसकी आग पृथ्वी के सभी छोर तक फैल जाएगी। यह अंधकार पर चमकेगी। अंधकार पृथ्वी से दूर हो जाएगा और गहरा अंधकार सूखी भूमि से दूर हो जाएगा।

इन लेखकों ने एक ऐसे पुरोहित नेता की आशा की थी, जिसकी भेंटें परमेश्वर को स्वीकार्य होंगी और जिसकी शिक्षाएँ परमेश्वर के नियम के अनुरूप होंगी। पुरोहित मसीहा की इस आशा के लिए प्राचीन दुनिया में सबसे व्यापक साक्ष्यों में से एक फिर से लेवी के नियम से आता है, विशेष रूप से 18वें अध्याय से। इस नियम के अंत में, हम पढ़ते हैं कि जब प्रभु की ओर से उन पर प्रतिशोध आएगा, तो पुरोहिताई समाप्त हो जाएगी।

और फिर प्रभु एक नया याजक खड़ा करेगा, जिसके सामने प्रभु के सारे वचन प्रकट किए जाएंगे। यह याजक धरती पर सूरज की तरह चमकेगा। वह स्वर्ग के नीचे से सारा अंधकार दूर कर देगा।

महिमा के मंदिर से पवित्रता उस पर पिता के समान आवाज़ के साथ आएगी, जैसे अब्राहम से इसहाक पर आई थी। और परमप्रधान की महिमा उस पर फूट पड़ेगी। और समझ और पवित्रता की आत्मा उस पर विश्राम करेगी।

पीढ़ी-दर-पीढ़ी उसका कोई उत्तराधिकारी नहीं होगा। उसके याजकत्व में पाप समाप्त हो जाएगा। और अधर्मी लोग अपने बुरे कामों से विश्राम लेंगे।

और धर्मी लोग उसमें विश्राम पाएंगे। और वह स्वर्ग के द्वार खोल देगा। वह उस तलवार को हटा देगा जो आदम के समय से धमकी देती आ रही है।

और वह पवित्र लोगों को जीवन के वृक्ष का फल खाने को देगा। पवित्रता की आत्मा उन पर रहेगी। और बलियाल उसके द्वारा बन्धा रहेगा।

हम एक पुरोहित मसीहा की अपेक्षाओं और लेवी के नियम जैसे ग्रंथों और इब्रानियों के पुरोहितीय मसीहशास्त्र के बीच कुछ करीबी संबंध पा सकते हैं। हम पाते हैं कि यह अपेक्षा है कि परमेश्वर

इस पुरोहित को सीधे नियुक्त करता है। कि यह पुरोहित परमेश्वर के वचन का एक विश्वसनीय मध्यस्थ होगा।

कि परमेश्वर इस याजक को किसी अर्थ में पुत्र के रूप में मानेगा। कि इस याजक का कोई उत्तराधिकारी नहीं होगा। हम तुलना कर सकते हैं कि इब्रानियों के लेखक ने यीशु के बारे में हमेशा के लिए महायाजक के रूप में क्या कहा।

कि यह पुजारी पाप को समाप्त कर देगा। और यह पुजारी अनन्त राज्य का मार्ग खोलता है। लेवी के नियम में इसके लिए स्वर्ग की भाषा का इस्तेमाल किया गया है।

लेखक स्वर्गीय विश्राम या स्वर्गीय देश या यहाँ तक कि स्वर्गीय परमपवित्र स्थान की भाषा का उपयोग करते हैं। वे यह भी उम्मीद करते हैं कि पुरोहित मसीहा शैतान पर अपनी निर्भरता के कारण का समर्थन करता है। लेवी के नियम में यहाँ इसे बलियाल कहा गया है।

इन सभी समानताओं के बावजूद, अंतर भी उतने ही उल्लेखनीय हैं। द्वितीय मंदिर काल के ग्रंथों में ये मॉडल अभी तक किसी स्वर्गीय उच्च पुजारी का सुझाव नहीं देते हैं जो ईश्वरीय क्षेत्र के सच्चे अभयारण्य में कार्य करेगा। पुरोहित मसीहा का मध्यस्थता कार्य भी इन ग्रंथों में मौन है, यदि मौजूद है।

और निश्चित रूप से पापों के लिए शुद्धिकरण बलिदान के रूप में पुरोहित मसीहा के आत्म-बलिदान के विचार जैसा कुछ नहीं है। इन पहलुओं में, इब्रानियों के लेखक ने खुद को उन परंपराओं में काफी नवप्रवर्तक के रूप में दिखाया है जो उन्हें अपनी यहूदी विरासत से विरासत में मिली होंगी। इब्रानियों अध्याय 2, श्लोक 5 से 18, कई महत्वपूर्ण तरीकों से लेखक की बयानबाजी की रणनीति में योगदान करते हैं।

इस भाग में, वह अपने श्रोताओं का ध्यान यीशु पर केंद्रित करना जारी रखता है। यीशु ही वह है जिसे उपदेशक चाहता है कि श्रोता देखें, हर परिस्थिति में अपने मन की आँखों के सामने रखें। लेखक यहाँ महिमा की आशा पर भी जोर देता है जो श्रोताओं के सामने है, इसलिए, उनकी वर्तमान परिस्थितियों में सम्मान की कमी के बावजूद उनके निरंतर धीरज का समर्थन करता है।

लेखक ने यीशु के आत्म-समर्पण और बलिदान के कारण श्रोताओं को मिलने वाले लाभों के बारे में भी बताना शुरू कर दिया है। उदाहरण के लिए, श्रोता मृत्यु के भय से मुक्त हो गए और यीशु उन तरह के परीक्षणों के लिए अभ्यस्त हो गए जिनका सामना उनके कई भाई-बहन करेंगे ताकि वह उनकी ओर से अधिक प्रभावी मध्यस्थ बन सकें। इसका परिणाम यह है कि कृतज्ञता और निष्ठा में यीशु के साथ निरंतर जुड़ाव श्रोताओं पर एकमात्र महान मार्ग के रूप में प्रभाव डाल रहा है।

लेखक श्रोताओं को यह भी समझाना चाहता है कि उनके पास अपने पड़ोसी द्वारा उनकी प्रतिबद्धता को नष्ट करने के प्रयासों के सामने दृढ़ रहने का हर कारण है। सबसे खास बात यह है कि उनके पास परमेश्वर के पुत्र की निरंतर सहायता है, जो उन्हें किसी भी प्रलोभन को सहने और उस पर विजय पाने के लिए तैयार करेगा, अगर वे उस पर भरोसा करेंगे, उनकी मदद करने की

उसकी क्षमता पर भरोसा करेंगे। इब्रानियों का यह भाग विशेष चुनौतियों के बारे में भी बात करना जारी रखता है और हमारे शिष्यत्व के मार्ग में बारहमासी योगदान देता है।

यह हमें चुनौती देता है कि हम उस पर विश्वास बनाए रखें जिसने हमारे साथ ऐसा विश्वास रखा, जैसा कि हम यीशु में देखते हैं। यदि हम अपने अंदर लेखक के इस संदेश को आत्मसात कर लें कि यीशु ने जो कुछ भी सहा वह हमारे लाभ के लिए, हमारे लिए सहा, तो हमारे रास्ते में आने वाली किसी भी कठिनाई, परीक्षण या कष्ट के दौरान उसके साथ विश्वास बनाए रखना हमारे लिए एकमात्र नेक कार्य बन जाता है। लेखक हमें यह भी याद दिलाता है कि हम चाहे किसी भी प्रलोभन या परीक्षण की स्थिति में खुद को पाएं, यीशु एक मौजूदा मदद है और हमें वह सब दे सकता है जिसकी हमें प्रलोभन या परीक्षण के उस प्रकरण से बिना किसी नुकसान के गुजरने के लिए आवश्यकता है।

बहुत बार, जब हम परीक्षा में पड़ते हैं, इस अर्थ में, मुझे लगता है कि मुख्य रूप से हमारी अपनी इच्छाओं या ईश्वर द्वारा हमारे सामने रखे गए मार्ग से दाईं या बाईं ओर मुड़ने की इच्छा से, बहुत बार, हम यीशु को परीक्षा की उस स्थिति में नहीं लाते हैं। बहुत बार, जब हम परखें जाते हैं, और परीक्षा के द्वारा, मेरे मन में ऐसी परिस्थितियाँ आती हैं जहाँ यह वास्तव में हमारे अंदर की कोई चीज़ नहीं होती है, बल्कि हमारे बाहर की कोई चीज़ होती है जो हम पर दबाव डालती है और हमें उस मार्ग पर खुद को ढालने के लिए दबाव डालने की कोशिश करती है जिसे दुनिया हमारे लिए चुनती है, बहुत बार उन स्थितियों में भी, हम यीशु को उस स्थिति में लाने में विफल हो जाते हैं। जिस प्रकार इब्रानियों का लेखक अपनी मण्डली को यीशु की उपस्थिति और उन लोगों को सहायता प्रदान करने की क्षमता का स्मरण करा रहा है जो आत्मिक रूप से अब्राहम के वंश बन गए हैं, उसी प्रकार लेखक हमसे भी बात करेगा और हमें किसी भी स्थिति में अनुग्रह के सिंहासन की ओर दौड़ने की आदत सीखने के लिए प्रेरित करेगा और उस समय यीशु से प्रार्थना करेगा और उसे अपने भीतर आमंत्रित करेगा ताकि वह हमें परीक्षा या प्रलोभन की उस स्थिति में ऊपर उठा सके, हमें आगे के मार्ग पर पुनः केन्द्रित कर सके, और अपनी उपस्थिति और अपने उदाहरण के द्वारा हमें उस मार्ग की याद दिला सके जो स्थायी पूर्णता और सम्मान की ओर ले जाता है, जो हमेशा परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता का मार्ग होगा, चाहे इसका अर्थ आत्म-त्याग या बाहरी दबाव का सामना करने में दृढ़ता के संदर्भ में कुछ भी हो।

लेखक हमें यह अनुभव करने की चुनौती भी देता है कि मृत्यु के भय से मुक्ति का क्या अर्थ है। मृत्यु का भय बाहरी दबाव या किसी भी ऐसी चीज़ का सामना करने में मानवीय साहस को कमजोर कर देता है जो नुकसान या इससे भी बदतर होने का खतरा पैदा करती है। मृत्यु का भय ही लोगों को अन्याय के सामने कायर बनाता है, चाहे वह व्यक्तिगत रूप से अनुभव किया गया हो या देखा गया हो।

मृत्यु का भय ईश्वर द्वारा बुलाए गए जीवन में खुद को निवेश करने की हमारी प्रतिबद्धता को नष्ट कर देता है, जिससे हमें लगता है कि हमें इस जीवन और इस जीवन की चीज़ों के लिए अधिक से अधिक जीने की ज़रूरत है क्योंकि इस जीवन का अंत है, जिसके बाद बहुत कुछ अज्ञात है या शायद कुछ भी नहीं है। मृत्यु का भय ही वह है जो अंततः हमें अपने जीवन को सुरक्षित करने, यहाँ स्थायित्व की भावना को सुरक्षित करने के लिए बेकार तरीकों से प्रेरित करता है क्योंकि यह

भावना बनी रहती है कि हमारा विघटन या शून्यता द्वारा विलीन होना हमेशा हमारे सामने होता है। मृत्यु का यह भय हमें अति-उपलब्धियों की ओर ले जा सकता है, हमें अपने लिए धन और अपने लिए एक खजाना बनाने की कोशिश करने के लिए प्रेरित कर सकता है जो किसी भी इच्छा या आवश्यकता के विरुद्ध एक इन्सुलेशन बनकर मृत्यु के विरुद्ध एक प्रकार का इन्सुलेशन बन जाता है।

यह हमें बाध्यकारी और नियंत्रित व्यवहार की ओर ले जा सकता है क्योंकि हम जीवन को व्यवस्थित करने और अराजकता को दूर रखने की कोशिश करते हैं। इन सभी तरीकों से, मृत्यु का भय मनुष्य के लिए ईश्वर के इरादों को नष्ट कर देता है। इस घोषणा में कि यीशु ने अपने अनुयायियों को मृत्यु के भय से मुक्त कर दिया है, लेखक हमें यह पता लगाने की चुनौती देता है कि हमारा प्रोजेक्ट क्या बन जाता है, मानव जीवन क्या बन जाता है यदि हम वास्तव में इस विश्वास को स्वीकार कर लेते हैं कि मृत्यु हमारे अस्तित्व का सब कुछ नहीं है और यदि वास्तव में, यह इस भौतिक सृष्टि के लिए नहीं था कि हम अंततः नियत हैं।

यदि हम मृत्यु से परे जाने, पुनरुत्थान के वादे को थामे रखते हैं, साथ ही धार्मिकता से प्रेम करने और अधर्म से घृणा करने के ईश्वर के आह्वान को मानते हैं, तो हम इस जीवन में ईश्वर के मूल्यों और ईश्वर के दर्शन के लिए प्रयास करने के लिए बहुत सशक्त हैं, यहाँ तक कि बहुत बड़ी व्यक्तिगत हानि और विरोध के बावजूद भी। दुनिया के प्रति इस तरह का झुकाव हमें एक जीवन रेखा भी देता है जिसके द्वारा हम अपनी मृत्यु के विरुद्ध रक्षा के अपने प्रयासों के उलझे हुए जाल से बाहर निकल सकते हैं, जिससे हम अपने स्वयं के भय और असुरक्षाओं की सेवा करने के लिए स्वतंत्र हो जाते हैं, लेकिन एक अलग, महान, ईश्वर-केंद्रित एजेंडा।